मकर संक्रांति का मेला

(जैव विविधता की कहानी)



श्याम बहादुर नम्र

लेखक की कलम से

श्रम निकेतन संस्थान द्वारा संचालित बाल-केंद्रित 'अपना स्कूल परियोजना' के अंतर्गत बच्चों को जैव विविधता के बारे में समझ विकसित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा केंद्र, पूना से एक अल्प अवधि की लघु-परियोजना के लिए आर्थिक सहायता मिली तो यह सोचा गया कि जैव विविधता के बारे में शिक्षकों और बच्चों की समझ को उनके ज्ञान और अनुभवों के संदर्भ में आपसी बात-चीत द्वारा परखा जाए और एक-दूसरे के सहभागी अनुभवों के साथ उन्हें परिचित कराते हुए उनकी जैव विविधता की समझ विकसित की जाए।

इस कार्य के लिए शिक्षकों की दो कार्यशालाएँ की गईं। हर स्कूल में बच्चों से परिवेश के जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के बारे में जानकारी इकट्ठी की गई। इस जानकारी के साथ हर स्कूल में जैव विविधता के बाल मेले आयोजित किए गए। बाल मेलों में बच्चों ने पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों के आपसी संबंधों को दिखाने वाले चित्र, मिट्टी के खिलौने, जंगल के मॉडल और पत्तियों के एलबम बनाकर प्रदर्शित किया।

कार्यशालाओं और बाल मेलों के अनुभवों से लगा कि कहानियों द्वारा बच्चों को जैवविविधता के बारे में अच्छी तरह प्रभावशाली जानकारी दी जा सकती है। इस किताब में कहानी के रूप में यह प्रयास किया गया है।

यह कहानी तीन खंडों में विभाजित है। कहानी के अधिकांश पात्र बच्चे हैं। बच्चों के साथ अनेक अनुभव समेटे दादा जी हैं। दादा जी और बच्चों के बीच मेले की तैयारी से लेकर मेला देखने और वापस लौटने तक का वार्तालाप और परिवेश की गतिविधियों को जीवंत बनाने का प्रयास किया गया है। कहानी की अन्तर्वस्तु मुख्यरूप से शिक्षकों और बच्चों के अनुभवों के आधार पर चुनी गई है। कहानी के अनुकूल चित्र बनाने का प्रयास किया गया है। मुझे आशा है कि यह किताब न केवल बच्चों को रुचिकर लगेगी बल्कि यह उनमें जैवविविधता की ऐसी समझ विकसित करेगी जिससे वे पर्यावरण का संरक्षण करने में निश्चित रूप से अपनी भूमिका निभाएँगें।

हम पर्यावरण शिक्षण केंद्र, पूना के प्रति, जिनकी आर्थिक मदद से यह किताब प्रकाशित हो रही है, आभारी हैं।

[illegible]
सचिव
श्रम निकेतन संस्थान

1

अनुभव के दादा जी



'दादाजी ! मेला देखने के लिए पैसा दीजिए न।' अनुभव ने मकर–संक्रांति का मेला देखने के लिए दादाजी से पैसे माँगते हुए कहा।

'दोपहर बाद जब मेला चलेंगे, तब पैसे ले लेना।' आँगन में नीम के नीचे खटिया पर बैठे सन से बाध कातते हुए दादा जी बोले। दादा जी बायें हाथ में सन लिए हुए थे और दाहिने हाथ से लकड़ी का ढेरा घुमा रहे थे। अनुभव सन से बाध बनते हुए देख रहा था।

'दादा जी यह क्या है?' उसने सन की ओर इशारा करते हुए कौतूहल से पूछा।

दादा जी ने बताया, 'यह सन है।'

'यह कैसे बनता है?' अनुभव ने पूछा।

दादा जी ने बताया, 'बरसात होते ही सन का बीज खेत में बो देते हैं। जब इसकी फसल डेढ़–दो फुट हो जाती है, तब जुताई कर उसे मिट्टी में मिला देते हैं। इससे खेत उपजाऊ हो जाता है। कुछ फसल बीज के लिए बचा ली जाती है, उसी के डंठल को पानी में सड़ाते हैं और उसे पीटकर छिलका निकाल लेते हैं। यह उसी का पिटा हुआ छिलका है।'

अनुभव ने पूछा, 'इससे क्या–क्या बनता है?'

दादा जी ने बताया,'यह चारपाई के लिए बाध बनाने के काम आती है। इससे रस्सी, बोरा या फट्टी भी बनाई जाती है।'

अनुभव ने पूछा,'दादाजी! क्या कपड़ा भी इसीसे बनता है?' 

'नहीं, इसका बना कपड़ा बहुत खुरदुरा होगा। इसलिए हम लोग कपास से बना कपड़ा पहनते हैं।'

अनुभव ने पूछा, 'क्या कपास भी सन की तरह डंठल सड़ाकर बनाते हैं?'

दादा जी ने अनुभव को बीज सहित कपास दिखाया और बताया, 'देखो यह कपास है। ये इसके काले–काले बीज हैं। इसे बोने से कपास का पौधा उगता है। उसमें फूल और फल आते हैं। यह कपास उसी फल से निकलता है।'

अनुभव ने पूछा, 'इस कपास से कपड़ा कैसे बनता है?'

दादा जी ने बताया, 'हमारे पुरखे कपास की खेती करते थे और तकली या चरखे से उसका सूत कातकर गाँव के बुनकर से कपड़ा बुनवाकर पहनते थे। लेकिन अब तो कारखानों में बड़ी–बड़ी मशीनों से कताई और बुनाई होती है। अधिकतर लोग बड़े–बड़े कारखानों में बने कपड़े पहनते हैं।'

अनुभव ने अपनी कमीज और दादा जी की धोती दिखाते हुए पूछा, 'दादा जी! हमारी कमीज तो बहुत मुलायम है। आप की धोती खुरदुरी क्यों है?'

दादा जी बोले, 'यह धोती खादी की है। हाथ–कते सूत से बुने कपड़े खादी कहलाते हैं। खादी के कपड़े कुछ खुरदुरे होते हैं। तुम्हारी कमीज का कपड़ा कारखाने में बना है। ऐसे कपड़े मुलायम होते हैं।'

अनुभव ने अपना स्वेटर और दादा जी की शाल दिखाते हुए पूछा, 'दादा जी! क्या यह स्वेटर और शाल कपास से बने हैं?'

दादा जी ने बताया, 'नहीं, ये कपास से नहीं बने हैं, स्वेटर ऊन से बना है और शाल सिल्क से बना है।'



'दादा जी! ऊन और सिल्क कैसे बनते हैं?' अनुभव ने [illegible]

दादा जी ने बताया, 'ऊन भेंड़ का बाल तकली [illegible] बनाया जाता है। सिल्क एक प्रकार के कीड़े की लार से बनता है [illegible] अपने चारों ओर एक खोल बनाता है। उसी खोल को उब[illegible] सिल्क के धागे निकाले जाते हैं।'

अनुभव ने पूछा, 'दादा जी! अगर [illegible] कीड़ा या भेंड़ न होती तो क्या हम लोगों को नंगा रह[illegible]

दादा जी ने बताया, 'बहुत पहले जब लोग खेती और पशुपालन नहीं जानते थे, तब अधिकतर नंगे रहते थे। कुछ लोग पेड़ के पत्ते, छाल व जानवरों की खाल पहनते थे। हजारों साल के बाद लोगों ने पशु–पालन और खेती करना सीखा। उसके बाद ऊन, सिल्क और कपास पैदा करने लगे और उससे कपड़े बनाने लगे। आजकल तो टेरीलिन व नाइलोन के भी कपड़े बनने लगे हैं।

उसी समय अनुभव की माँ ने अनुभव को आवाज देकर कहा, 'अनुभव बेटा! बकरी को थोड़ा चारा डाल दो।'

दादा जी ने अनुभव से कहा, 'अनुभव! बकरी को चारा डालकर आओ तो तुम्हें अच्छी–अच्छी बातें बताऊँगा।' अनुभव बकरी को चारा डालने चला गया।

अनुभव ने बकरी को चारा डाला और दादा जी के पास आकर बैठ गया। इसके पहले कि अनुभव कुछ पूछे, दादा जी ने अनुभव से पूछा, 'अगर बकरी को चारा–पानी न मिले तो क्या होगा?'

अनुभव बोला, 'तब वह दूध नहीं देगी। दीदी कहती हैं कि बिना खाए कोई जिंदा नहीं रहेगा। तब तो वह मर भी जाएगी।'

दादा जी बोले,' तुमने बिलकुल सही कहा। अब बताओ कि अगर अनाज न होता तो तुम क्या खाते?'



अनुभव ने कहा, 'तब हम बकरी का दूध पीकर रह लेते।'

दादा जी अनुभव की हाजिर जबाबी से बहुत खुश हुए। उन्होंने दूसरा सवाल पूछा, 'अगर बकरी, गाय या भैंस न होती तो तुम क्या करते?'

अनुभव ने थोड़ी देर सिर खुजलाया, फिर बोला, 'तब हम बीही (अमरूद) खाकर पेट भरते।'

दादा जी ने कहा, 'बीही तो केवल जाड़े में होती है। तब गर्मी और बरसात में तुम क्या खाकर पेट भरते?'

अनुभव दादा जी के एक के बाद एक सवाल दागने से पस्त हो गया। उसने कहा, 'अब आप ही बताइए कि तब हम क्या खाकर पेट भरते?'

दादा जी ने पूछा, 'अच्छा सोचकर बताओ कि इस गाँव में कौन–कौन से ऐसे पेड़ हैं, जिनके फल खाए जाते हैं?'

अनुभव ने सोचकर बताया, 'दादा जी! रामू चाचा के यहाँ कटहल का पेड़ है। कच्चे कटहल की सब्जी खाई और पके कटहल का कोवा खाया जाता है। केला भी तो खाया जाता है। आम, पपीता, सीताफल और जामुन भी खाते हैं।

दादाजी! जामुन खाने में बड़ा मजा आता है। इस साल गर्मी में हम खूब जामुन खाएँगे।'



दादा जी ने कहा, 'हाँ, खूब जामुन खाना और मुझे भी लाकर देना। अच्छा अब बताओ कि खेत में क्या–क्या पैदा होता है और तुम्हें उसमें क्या–क्या खाना अच्छा लगता है?'

अनुभव ने कहा, 'दादा जी! खेत में तो धान, गेहूँ, मक्का, बाजरा, अरहर, उरद, कोदो, गन्ना, सरसों, रमतिला, तिल और मटर, बहुत कुछ पैदा होता है। लेकिन मुझे तो भुट्टा भूनकर खाने में मजा आता है। हरी मटर भी अच्छी लगती है। हरा चना भूनकर उसका होरा बड़ा अच्छा लगता है। चने का साग भी नमक–मिर्च मिलाकर खाने में बड़ा मजा देता है। दादा जी! आपके लिए चने का साग खोटकर लाऊँ?'

दादा जी ने कहा, 'चने का साग कल खोटकर लाना। लेकिन अब तो तुम यह समझ रहे होगे कि तरह–तरह के अनाज, फल और सब्जी पैदा होना बहुत जरूरी है। अगर अरहर, मूँग या उरद न पैदा होता तो हम लोगों को दाल खाने को न मिलती।'

'दादा जी! हम तो दूध के साथ रोटी–भात खा लेते।' अनुभव ने दादा जी की बात बीच में काटते हुए कहा।

दादा जी बोले, 'अगर गाय–भैंस या बकरी न होती तो तुम्हें दूध भी न मिलता।'

अनुभव फिर बीच में बोल पड़ा, 'हाँ दादाजी! यह बात तो सही है। लेकिन गाय–भैंस को अगर घास न मिले तो वह दूध भी न देगी।'

दादा जी बोले, 'तुमने बिलकुल सही समझा। हम लोग दूध के लिए गाय पालते हैं। ऊन के लिए भेड़ पालते हैं। बैल गाड़ी खींचने के लिए बैल पालते हैं। घोड़ागाड़ी खींचने के लिऐ घोड़े पालते हैं। लेकिन इन जानवरों को जिंदा रहने के लिए घास–पात जरूरी है। वह घास–पात खेतों और पेड़–पौधों से मिलता है। अगर तरह–तरह के पेड़–पौधे न होते तो न जानवरों का पेट भरता और न हम लोगों का।'

अनुभव ने पूछा, 'दादा जी! आपने बताया था कि बहुत पहले लोग खेती और पशु–पालन नहीं जानते थे। तब वे लोग क्या खाकर पेट भरते थे?'

दादा जी ने बताया, 'तब लोग शिकार करके जंगली जानवरों का मांस और फल–फूल खाया करते थे।'

'आपको कैसे पता कि उस जमाने में लोग ऐसा करते थे?' अनुभव ने पूछा।

दादा जी उठे और बरामदे में टँगे एक चित्र को दिखाते हुए बोले, 'देखो इस चित्र में लोग आज कल का पहनावा पहने हैं। इसी तरह पुराने जमाने में भी लोग चित्र बनाते थे। कई जगह पुराने जमाने की ऐसी गुफाएँ मिली हैं, जिनमें बने चित्रों में लोगों को शिकार लाते और उसे आग में पकाते हुए दिखाया गया है। इन्हीं चित्रों से यह भी पता चलता है कि लोग जानवरों की खाल पहनते थे।'

उसी समय अनुभव का दोस्त सुशील आ गया। उसने पूछा, 'अनुभव! मेला देखने कब चलोगे?'

अनुभव बोला, 'दोपहर बाद चलेंगे। दादा जी भी हमारे साथ चलेंगे। तुम तैयार होकर आ जाओ।' सुशील मेले की तैयारी करने घर चला गया। अनुभव भी मेले के लिए तैयार होने लगा।





2

चिड़िया हमारी मित्र

अनुभव मेले के लिए तैयार होकर जैसे ही नीम के नीचे आया, ऊपर से किसी पक्षी ने बीट कर दिया। वह अनुभव के हाथ पर गिरा। अनुभव ने गुस्से से कंकड़ उठाया और उस पक्षी को मारना चाहा। दादा जी ने अनुभव को समझाते हुए कहा, 'बेटा! उसे मत मारो। जैसे फसल और जानवर हमारे काम के हैं वैसे ही यह चिड़िया भी हमारी दोस्त है।'

अनुभव ने अपने हाथ पर गिरा हुआ बीट दादाजी को दिखाते हुए कहा, 'देखिए न दादा जी! इस चिड़िया ने मेरा हाथ गंदा कर दिया। ऐसी चिड़िया हमारी दोस्त कैसे हो सकती है?'

दादा जी ने अनुभव के हाथ पर गिरा हुआ बीट ध्यान से देखा और कहा, 'देखो इस बीट में अमरूद के बीज हैं। इस चिड़िया ने अमरूद के साथ उसका बीज भी खा लिया था। इसी तरह चिड़ियाँ कई फल बीज सहित खा जाती हैं। उसके बाद वे दूर–दूर जाकर बीट करती हैं। इससे फल के बीज दूर–दूर पहुँच जाते हैं। वही बीज बरसात में उगकर पेड़ बन जाते हैं। तुम देखोगे कि हमारे खेत की बाड़ में चिड़ियों के बीट के कारण कई पौधे उगे हैं। मैंने पाँच साल पहले खेत की बाड़ से नीम का एक पौधा उखाड़कर यहाँ लगाया था। वही बढ़कर यह बड़ा पेड़ हो गया है।'

दादा जी की बात सुनकर अनुभव ने हाथ का कंकड़ फेंक दिया। उसी समय सुशील अपने मित्रों, सुष्मिता, फुलझर, सुमन और ऋषभ के साथ आ गया। सभी बच्चे दादा जी के साथ मेला देखने चल पड़े।

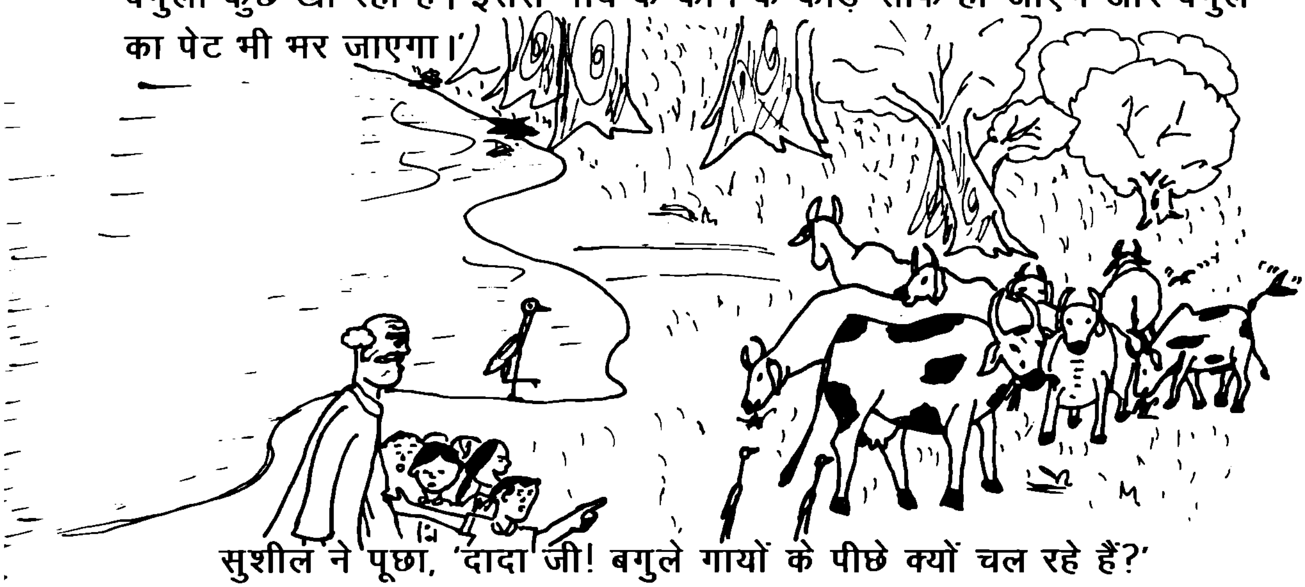
रास्ते में उन्होंने देखा कि बहुत सारे गिद्ध आकाश में उड़ते हुए नीचे उतर रहे थे। अनुभव ने पूछा, 'दादा जी! ये कौन सी चिड़ियाँ हैं? इनसे हमें क्या फायदा है?'

दादा जी ने बताया, 'ये गिद्ध हैं। गाँव में कोई मवेशी मर गया होगा। ये उसी का मांस खाने के लिए आ रहे हैं। अगर ये मरे हुए मवेशियों का मांस न खाएँ तो उनकी बदबू से सांस लेना मुश्किल होगा और गाँव में बीमारी भी फैल सकती है।'

अचानक सुशील ने कहा, 'वह देखो दादा जी! बहुत सारे बगुले।' सबने देखा कि चारागाह में बहुत से मवेशी घास चर रहे थे। उनके आस–पास बहुत से बगुले थे। कुछ उनकी पीठ पर बैठे थे और कुछ जमीन पर उनके पीछे–पीछे चल रहे थे। पास में एक तालाब था। कुछ बगुले उसमें भी खड़े थे।

सुष्मिता ने पूछा, 'दादा जी! बगुले मवेशियों के पास क्यों घूम रहे हैं?'

दादा जी ने बताया, 'दुनिया में सभी जीव एक–दूसरे के सहारे जीते–खाते हैं। मवेशियों के शरीर में जूँ या छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े रहते हैं। बगुले उन्हें खाने के लिए उनकी पीठ पर बैठ जाते हैं। देखो उस गाय के कान में एक बगुला कुछ खा रहा है। इससे गाय के कान के कीड़े साफ हो जाएँगे और बगुले का पेट भी भर जाएगा।'



सुशील ने पूछा, 'दादा जी! बगुले गायों के पीछे क्यों चल रहे हैं?'

दादा जी ने बताया, 'मवेशियों के चलने से जमीन के कीड़े–मकोड़े उड़ते हैं जिन्हें खाने के लिए बगुले पीछे–पीछे चलते हैं।'

अनुभव ने पूछा, 'कुछ बगुले तालाब में क्यों खड़े हैं?'

सुष्मिता बोल पड़ी, 'मैं बताती हूँ, वे मछली पकड़ने के लिए खड़े हैं। लेकिन दादा जी! जब हमारे खेत में सिंचाई होती है, उस समय भी बगुले आ जाते हैं। वहाँ तो मछली नहीं होती। बगुले वहाँ क्या खाने आते हैं?'

दादा जी ने बताया, 'सिंचाई के पानी के कारण घास–पात में छिपे कीड़े–मकोड़े उड़ने लगते हैं। उन्हें खाने के लिए बगुले वहाँ आ जाते हैं। इस तरह बगुले कीड़े–मकोड़ों से फसल की रक्षा भी करते हैं।'

ऋषभ ने कहा, 'दादा जी! यह सब देखकर लगता है कि पशु–पक्षियों तथा पेड़–पौधों का आपस में एक दूसरे के साथ गहरा संबंध है।'



उसी समय एक चिड़िया ऊपर से तालाब के पानी में झपटी और एक मछली चोंच में दबाकर उड़ गई। दादा जी ने कहा, 'देखो वह पक्षी मछली झपटकर ले गया। आदमी भी मछली खाता है। ये बगुले भी मछली पकड़ने के लिए पानी में खड़े हैं। जिस तरह जमीन के ऊपर रहने वाले प्राणियों का आपस में संबंध है उसी तरह इनका संबंध पानी में रहने वाले जीवों से भी है।'

ऋषभ ने पूछा, 'दादा जी! पानी में मेंढक भी रहते हैं। उनसे हमें क्या फायदा है?'

दादा जी बोले, 'मेंढक तालाब के कीड़े–मकोड़े खाकर उसे साफ रखते हैं। मच्छर, जिससे मलेरिया फैलता है, अपने अंडे गड्ढे या तालाब के रुके हुए पानी में देता है। मेंढक उन अंडों को खा जाते हैं। इससे वे मलेरिया की बीमारी रोकने में सहायक होते हैं।'

सुशील ने कहा, 'इसका मतलब यह हुआ कि तरह–तरह के जीवों और पेड़–पौधों का रहना हम लोगों के लिए बहुत जरूरी है।'

सुमन ने कहा, 'वह तो है ही। दीदी बता रही थीं कि हवा में आक्सीजन होता है। यह हमारे शरीर का खून साफ करता है।'

अनुभव सुमन की बात बीच में रोकते हुए बोल पड़ा, 'जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों के बीच यह आक्सीजन और खून कहाँ से आ गया?'

सुमन बोली, 'अनुभव! तुम बीच में गड़बड़ मत करो। मैं जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों के बीच के संबंध की ही बात बता रही हूँ। पेड़–पौधे आक्सीजन छोड़ते हैं। जीव–जंतु उसे साँस के साथ हवा से खींच लेते हैं।' इसके बाद उसने अपनी कलाई दिखाते हुए बताया, 'देखो हमारी कलाई में नीली नसें हैं। ये नसें शरीर का खराब खून फेफड़े की ओर ले जाती हैं। फेफड़े में वह आक्सीजन से साफ होता है और दूसरी नसों से पूरे शरीर में फैलता है। यदि खून साफ न हो तो हम लोग जिंदा नहीं रहेंगे। साँस छोड़ते समय खून का सारा कचरा कार्बन डाईआक्साइड बनकर बाहर निकल जाता है। यह पेड़–पौधों को जिंदा रहने के लिए जरूरी होता है।'

बच्चे बातचीत करते मेला जाने वाली सड़क पर पहुँच गए। तभी कोयले से लदा एक ट्रक उधर से गुजरा। दादा जी ने बच्चों को समझाते हुए कहा, 'इस सड़क पर लगातार तेज गाड़ियाँ चलती हैं। इससे दुर्घटनाएँ हो सकती हैं। इसलिए सब लोग सावधानी से बाएँ से चलो।'



दादा जी के कहने से सभी बच्चे सड़क की बायीं ओर हो कर चलने लगे। फुलझर ने कोयले के ट्रक की ओर संकेत करके पूछा, 'यह पत्थर का कोयला कैसे बनता है? कोई बताएगा?' ऋषभ ने कहा, 'जैसे लकड़ी जलाकर लकड़ी का कोयला बनाते हैं, वैसे ही पत्थर को पकाकर पत्थर का कोयला बनाया गया होगा।'

अनुभव ने कहा, 'यह तो जमीन से खोदकर निकाला जाता है। वहाँ इसे कौन पकाएगा?'

दादा जी बोले, 'यह कोयला पत्थर पकाकर नहीं बनाया जाता। यह भी पेड़ों से बना है।'

सुमन ने पूछा, 'यह पेड़ों से कैसे बना होगा?'

दादा जी बोले, 'जहाँ कोयला खदानें हैं वहाँ बहुत पहले बड़े–बड़े जंगल थे। वे जंगल मिट्टी में दब गए। बाद में वे ही कोयले बन गए। वही कोयले अब खदान से निकल रहे हैं। ये पत्थर की तरह ठोस होते हैं इसीलिए इन्हे पत्थर का कोयला कहते हैं। लेकिन ये भी लकड़ी के ही कोयले हैं।'

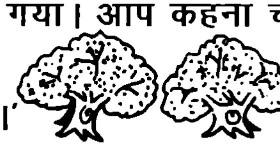


अनुभव ने पूछा, 'दादा जी! इतना सारा कोयला कहाँ जाता है?'

दादा जी ने बताया, 'इस कोयले से बिजली बनती है। यह बिजली बनाने के कारखाने में जा रहा है। तुम तो जानते ही हो कि बिजली से घर में रोशनी मिलती है, इंजन चलते हैं। आज कल तो रेलगाड़ी भी बिजली से चलती है। बिजली कोयले से बनती है, कोयला पेड़–पौधों से बना है। '

इसी बीच ऋषभ बोल पड़ा, 'दादा जी! मैं समझ गया। आप कहना चाहते हैं कि रेलगाड़ी भी पेड़–पौधों से चलती है।'

दादा जी बोले, 'तुम बिलकुल ठीक समझ रहे हो।'



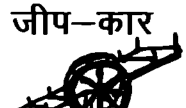
बात करते–करते सब बस अड्डे पर पहुँचे और मेले जाने वाली जीप में चढ़ गए। जीप पूरी सवारी भरकर मेले की ओर चली। उसी समय एक हवाई जहाज ऊपर से गुजरा। सुशील ने पूछा, 'दादा जी! हवाई जहाज किसकी ताकत से उड़ता है?' जीप में बैठे एक यात्री ने बताया, 'जैसे इस जीप में इंजन लगा है, वैसे ही हवाई जहाज में भी इंजन लगा है। वह इंजन पेट्रोल से चलता है।'

फुलझर ने पूछा, 'जीप का इंजन तो डीजल से चलता है। डीजल और पेट्रोल कहाँ से आता है?

ऋषभ ने कहा, 'मैंने सुना है कि मिट्टी के तेल की तरह डीजल–पेट्रोल भी जमीन खोदकर निकाला जाता है।'

दादा जी ने कहा, 'हाँ, तुमने ठीक सुना है। कोयले की तरह डीजल और पेट्रोल भी पेड़–पौधों से ही बने हैं। पेड़–पौधों में तेल भी होता है। बहुत साल पहले जब पेड़–पौधे मिट्टी में दबे तो उनकी लकड़ी कोयला बन गई और उनका तेल दबकर रिसा और नीचे इकट्ठा हो गया। वही किरासीन, डीजल और पेट्रोल के रूप में मिलता है। आज–कल शहर–बाजार में लोग गैस के चूल्हे पर खाना बनाते हैं। यह गैस भी उसी तेल से बनी है।'

'दादा जी! पेड़–पौधे अगर न होते तो न खाना पकता और न जीप–कार चलती।' ऋषभ ने कहा।



'तब तो हम लोग पैदल या बैलगाड़ी पर जाते' एक यात्री ने कहा।

अनुभव बोला, 'चाचा जी, पेड़–पौधे न होते तो न बैलगाड़ी चलती और न हम पैदल चल पाते।'

यात्री ने पूछा, 'बैलगाड़ी खींचने या पैदल चलने में पेड़–पौधों का क्या काम है?'

दादा जी ने बताया, 'अनुभव ठीक कहता है। चलने में भी ताकत लगती है, जो भोजन से मिलती है और भोजन पेड़–पौधों से मिलता है। पेड़–पौधे हमारी ताकत के खजाने हैं।'

अनुभव ने पूछा, 'दादा जी क्या पुराने जमाने में भी जीप–कार होती थी?'

दादा जी बोले, 'पुराने जमाने में तो बैलगाड़ी भी नहीं थी। जब लोगों ने पशुपालन करना प्रारंभ किया तो बैल, गधे और घोड़े की पीठ पर माल ढोने लगे। वे भारी चीजें घसीटकर ले जाते थे। हजारों साल बाद उन्होंने लुढ़काना सीखा और समझा कि गोल चीजें तेजी से लुढ़कती हैं। तब उन्होंने पहिया बनाया और बाद में गाड़ी बनाई। तब राजा लोग रथ पर और गाँव के धनी लोग बैलगाड़ी पर चलते थे। पहला इंजन लगभग दो सौ साल पहले बना। वह भाप से चलता था। बहुत दिनो तक रेलगाड़ियाँ भाप के इंजन से चलीं।'



सुमन ने पूछा, 'भाप की ताकत कहाँ से आती है।'

दादा जी ने बताया, 'कोयला जलाकर पानी गरम करते हैं। पानी गरम होकर भाप बनता है। इसी भाप से भाप का इंजन चलता है। यह समझो कि भाप का इंजन भी कोयला यानी पेड़–पौधों की ताकत से चलता है।'

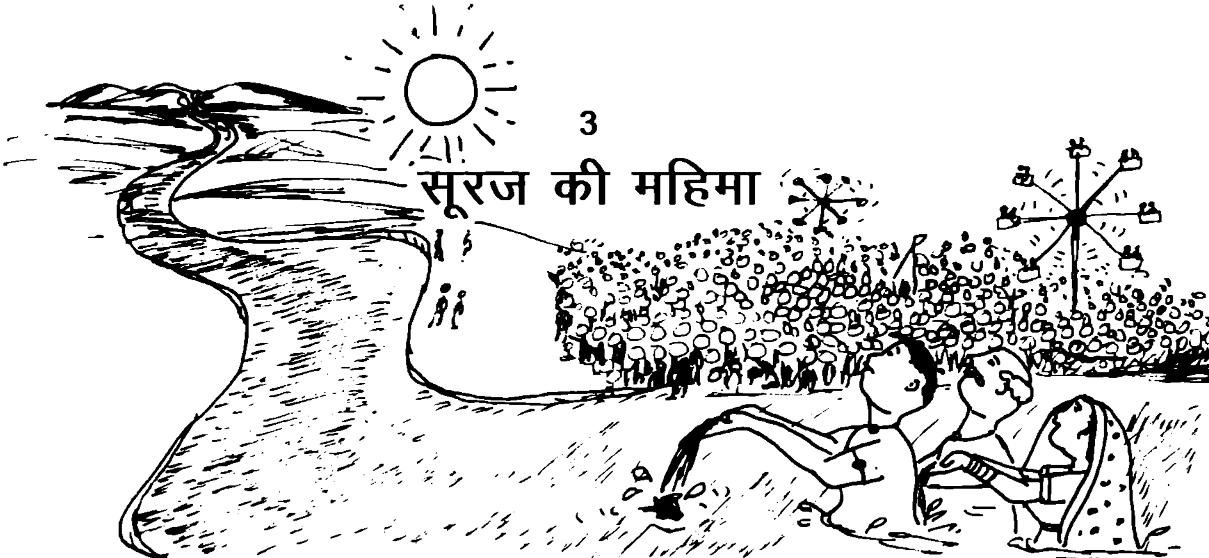


ऋषभ ने पूछा, 'दादा जी जीप–कार कब बनी?'

दादा जी ने बताया, 'जीप–कार तो सौ, सवा सौ साल से चलने लगी है। वह भी बीस–पचीस साल पहले गाँवों में कभी–कभी ही दिख पाती थी। मेरे बचपन में तो यहाँ सड़क भी नहीं थी। तब तो लोग पैदल ही चला करते थे। राजा भी घोड़े पर बैठकर यहाँ शिकार खेलने आया करते थे। अपने गाँव में मैं साइकिल लाया तो गाँव की पहली साइकिल होने के कारण सारा गाँव उसे देखने के लिए टूट पड़ा था।'



दादा जी पुराने जमाने की बातें बता ही रहे थे कि जीप के ड्राइवर ने जीप रोकते हुए कहा, 'चलिए उतरिए। मेला आ गया।' सब लोग जीप से उतरकर मेले के भीतर जाने लगे। दादा जी ने बच्चों को समझाया, 'देखो बच्चों, मेले में सब एक साथ रहना। नहीं तो भीड़ में खो जाओगे।'



3

सूरज की महिमा

मकर संक्रांति का मेला हर साल 14 जनवरी को सोन नदी के किनारे सीतापुर गाँव में लगता है। दादा जी बच्चों को सोन नदी के तट पर ले गए। वहाँ कई लोग सूरज की ओर मुँह किए नदी में खड़े थे। वे नदी का पानी अँजुली में भरकर सूरज की ओर गिरा रहे थे।

यह दृश्य देखकर सुष्मिता ने पूछा, 'ये लोग ऐसे क्यों कर रहे हैं?'

दादा जी ने बताया, 'मकर संक्रांति के दिन लोग सूर्य की पूजा करते हैं। इसीलिए लोग नदी का पानी सूरज को चढ़ा रहे हैं।'

उसी समय मूँगफली बेचने वाला आ गया। दादा जी ने बच्चों को मूँगफली खरीदकर दी और मेला घुमाने ले गए। मेले में बच्चे झूला झूले, चरखी पर चढ़े, भालू–बंदर का नाच और बंगाल का जादू देखा। वे घूमते–घूमते एक तंबू के पास पहुँचे। वहाँ एक बैनर लगा था। उसमें सूर्य के चित्र के साथ 'सूरज की महिमा' लिखा था। यह बैनर एक प्रदर्शनी का था। बच्चों ने वह प्रदर्शनी देखना चाहा। दादा जी सबको लेकर प्रदर्शनी में घुसे।

प्रदर्शनी बहुत आकर्षक थी। उसमें बड़े–बड़े कई पोस्टर लगे थे। एक पोस्टर मकर संक्रांति मेले का था। उसमें एक औरत सूर्य की पूजा करते दिखाई गई थी। दूसरे पोस्टर में सूर्य का चित्र बना था। उसकी किरणें पेड़–पौधों पर पड़ रही थीं। वहाँ यह लिखा था कि पेड़–पौधे मिट्टी से अपना भोजन लेते हैं और सूर्य के प्रकाश की सहायता से उसे पचाते हैं। इससे पेड़–पौधों का विकास होता है। अगले पोस्टर में चित्र बनाकर यह बताया गया था कि हमें पेड़–पौधों से भोजन मिलता है। उसी से हमें ताकत मिलती है। इसी ताकत से हम सारा काम करते हैं।

यह पोस्टर देखकर सुमन बोली, 'दादा जी! रास्ते में भी हम लोग यही बात कर रहे थे कि सारी ताकत पेड़–पौधों से मिलती है।'

इसके बाद दादा जी ने अगला पोस्टर दिखाया। उस पोस्टर में नदी पर एक बांध बना था। बांध का पानी ऊपर से नीचे गिर रहा था और वहाँ बिजली बनाने की मशीन लगी थी।

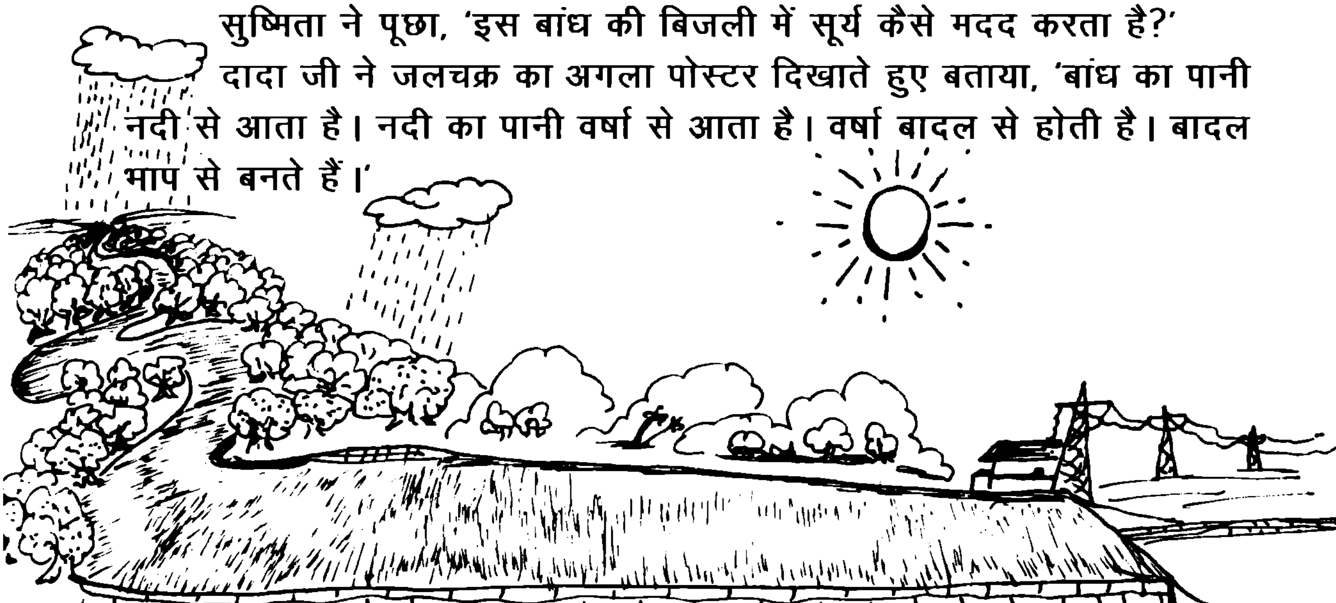


फुलझर बोली, 'दादा जी! यह बिजली तो बिना पेड़–पौधों के बन रही है। इस बिजली में ताकत कहाँ से आती है?'

दादा जी ने कहा, 'असली ताकत तो सूर्य की रोशनी में है। यह ताकत पेड़–पौधों के सहारे तो मिलती ही है। कई दूसरे तरीकों से भी काम करती है।'

सुष्मिता ने पूछा, 'इस बांध की बिजली में सूर्य कैसे मदद करता है?'

दादा जी ने जलचक्र का अगला पोस्टर दिखाते हुए बताया, 'बांध का पानी नदी से आता है। नदी का पानी वर्षा से आता है। वर्षा बादल से होती है। बादल भाप से बनते हैं।'



तभी अनुभव बोल पड़ा, 'और पानी सूर्य की गर्मी से गरम होकर भाप बनता है। यही न दादा जी?'

सुशील ने पूछा, 'लेकिन दादा जी, बादल को तो हवा ले आती है। हवा को ताकत कहाँ से मिलती है?'

सुष्मिता ने अगला पोस्टर दिखाते हुए कहा, 'अरे! यह बात दादा जी से रास्ते में समझना। अभी तो यह वायुचक्र का पोस्टर देखो।'

इसमे दिखाया गया था कि सूर्य की गरमी से हवा गर्म होकर हल्की हो जाती है और ऊपर उठती है। फिर नीचे की खाली जगह भरने के लिए अगल–बगल की हवा को आना पड़ता है। इस तरह हवा चलने लगती है। बादल को यही हवा चलाती है।

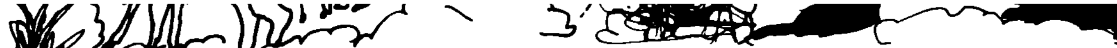


ऋषभ बोला, 'इस प्रदर्शनी से तो बहुत कुछ सीखने को मिला। लेकिन दूसरे मेलों में मैंने ऐसी प्रदर्शनी कभी नहीं देखी।'

फुलझर बोली, 'अरे तू तो बुद्धू का बुद्धू ही रहा। अभी तक नहीं समझा कि मकर संक्रांति सूर्य पूजा का त्यौहार है। इसीलिए इस प्रदर्शनी में सूर्य के बारे में बताया गया है।'

प्रदर्शनी के संचालक परस्ते जी बच्चों की बातें ध्यान से सुन रहे थे। वे बोले, 'तुम लोगों में कोई भी बुद्धू नहीं है। तुम लोग तो बहुत होनहार और बुद्धिमान बच्चे हो।' यह कहकर वे बच्चों को अगले कक्ष में ले गए। वहाँ उन्होंने बच्चों को कई और पोस्टर दिखाए।

एक पोस्टर में जंगल का चित्र बना था। चित्र के एक ओर हिरणों का एक झुंड घास चरते हुए दिखाया गया था। कुछ बंदर पेड़ों पर बैठकर फल खा रहे थे। जंगल के दूसरे किनारे एक शेर को हिरण का शिकार करते दिखाया गया था। परस्ते जी ने बताया, 'पेड़–पौधे सूर्य से ताकत लेकर फूलते–फलते हैं। अनेक जीव–जंतु, पेड़–पौधों के घास–पात, अनाज और फल आदि खाकर जिंदा रहते हैं। जानवरों में शेर और पक्षियों में बाज की तरह कई जीव दूसरे जीवों को खाकर जिंदा रहते हैं। इस तरह पेड़–पौधे और जीव–जंतु एक–दूसरे के सहारे जीते हैं।'



परस्ते जी की बात सुनकर सुष्मिता बोली, 'शेर तो खतरनाक जीव है। इससे हमें क्या फायदा है?'

परस्ते जी ने बताया, 'अगर शेर नहीं होगा तो जंगल में हिरण जैसे घास–पात खाने वाले जानवर बढ़ जाएँगे। ऐसे जानवर जंगल में उगने वाला हर पौधा चर जाएँगे। इससे जंगल कम होता जाएगा और एक दिन समाप्त हो जाएगा। जंगल नहीं रहेगा तो वर्षा कम हो जाएगी। जब वर्षा नहीं होगी तो पेड़–पौधे नहीं उगेंगे। जब पेड़–पौधे ही नहीं रहेंगे तो सब जगह रेगिस्तान हो जाएगा और बाकी जीवों को कुछ खाने को नहीं मिलेगा।'

'तब तो हम सब बिना खाए मर जाएँगे।' सुमन बोली।

सुशील ने पूछा, 'हम लोग क्यों मरेंगे? हम तो खेती की उपज खाते हैं।'

अनुभव ने कहा, 'बिना पानी के तो खेती भी नहीं होगी।'

सुष्मिता बोली, 'लेकिन खेती के लिए तो नदी, कुएँ और नलकूप से पानी मिल जाएगा। इसमें जंगल की क्या जरूरत है?'

परस्ते जी ने दूसरा पोस्टर दिखाते हुए समझाया। उस पोस्टर में यह बताया गया था कि जंगल के पेड़ वर्षा का पानी रोककर धीरे–धीरे टपकाते हैं। यह पानी जमीन के अंदर चला जाता है। इसी तरह पेड़ अपनी जड़ों में पानी बचाकर रखते हैं। यही पानी हम कुएँ और नलकूप से निकालते हैं। अगर पेड़ न हो तो तेज वर्षा से जमीन पिटकर कड़ी हो जाती है और पानी नीचे न जाकर बह जाता है। जब पानी जमीन के नीचे नहीं जाएगा तब खेती के कुएँ और नलकूप भी सूख जाएँगे। तब खेती भी नहीं होगी। इसी तरह तेज वर्षा का पानी अपने साथ अच्छी मुलायम मिट्टी बहा ले जाता है और बालू रह जाता है। धीरे–धीरे ऐसी जगह रेगिस्तान बन जाती है।'

अनुभव बोला, ' मैं समझ गया कि खेती के लिए पानी और पानी के लिए जंगल जरूरी है।'

तभी सुमन बोल पड़ी, 'और जंगल तभी बचेगा जब शेर हिरणों का शिकार करता रहेगा। नहीं तो हिरण बढ़ते जाएँगे और उनकी चराई से नए पेड़–पौधे उगने ही न पाएँगे।'

ऋषभ बोला, 'मैं तो शेर से बहुत डरता हूँ। लेकिन आज यह समझ में आया कि हम लोगों को जिंदा रहने के लिए शेर का जंगल में रहना बहुत जरूरी है।'

दादा जी ने कहा, 'बच्चों! अब शाम हो रही है। चलो, अभी तुम लोगों को खिलौने भी खरीदने हैं।

सब बच्चे प्रदर्शनी से निकलकर खिलौने खरीदने चल पड़े। दादा जी ने बच्चों को मिठाइयाँ खिलाई। इसके बाद सब घर की ओर चल पड़े। घर लौटते समय बच्चों ने देखा कि मवेशी चरागाह से घर लौट रहे थे। बगुलों का एक झुण्ड कतार बनाकर आकाश में उड़ रहा था। सूरज खूब बड़ा और लाल होकर पश्चिम में जंगल की ओट में छुप रहा था। ऐसा लगता था कि सब अपने–अपने घर जाने की जल्दी में थे।



किताब के बारे में

मकर संक्रांति का मेला (जैव विविधता की कहानी)

प्रथम संस्करण : जनवरी 2000

विचार विमर्श (कार्यशाला में)
अनुराधा सिंह, मधुकर चतुर्वेदी, सत्येंद्र मिश्रा, विभा सिंह, चेतन पटेल, सुचिता परस्ते, राम सिंह, गुलाबवती पटेल, अमरदीन रोहणी, नागेश्वरी, भारती सिंह, जोधिका प्रसाद, राजेंद्र नामदेव, सुमित्रा विश्वकर्मा, जय कुमार सिंह, जमंतू सिंह, डोमारी सिंह मार्को, सकलीचा राजभर, पुष्पेन्द्र सिंह, अनीता द्विवेदी, लल्ला प्रसाद यादव, सुलोचना यादव, राधा पटेल, सरस्वती पटेल

लेखक
श्याम बहादुर नम्र

चित्रांकन
संजय विश्वास

कंप्यूटर कंपोजिंग, ग्राफिंग और डिजायनिंग
नीरज श्रीवास्तव

आर्थिक सहयोग
पर्यावरण शिक्षण केंद्र, 18, ग्रीन पार्क, औंध, पुने 411007

प्रकाशक
श्रमनिकेतन संस्थान, जमुड़ी, अनूपपुर, शहडोल, म.प्र. 484224
फोनः (07659) 22058

मुद्रक
दृष्टि आफसेट, भोपाल, फोनः (0755) 576733, 591106



श्रम निकेतन संस्थान, द्वारा, प्राथमिक शिक्षा में जैव–विविधता शिक्षण
हेतु पर्यावरण शिक्षण केन्द्र पूना के सहयोग से प्रकाशित